Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

जनसंचार माध्यम के परिप्रेक्ष्य : विदेश में हिन्दी भाषा का बढ़ता प्रभाव

डॉ. एफ. मस्तान शाह, सहयोगी प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग एन.एम.डी.कालेज,गोंदिया

हिन्दी भाषा के विकास का जनसंचार माध्यमों के विकास में गहरा योगदान है। संचार का अर्थ है एक दुसरे को जानना, संबंधित सूचनाओं का आदान-प्रदान करना, बातचीत या वार्तालाप करना होता है। संचार प्रणाली अत्यंत विकसित एवं वैज्ञानिक है। संचार के माध्यम से मनुष्य के सामाजिक बंधन बनते है और विकसित होते है। समाज के संचालन की समस्त प्रक्रिया संचार पर आधारित होती है। संचार मनुष्य के अलावा सभी प्राणियों में होता है। इसके लिए माध्यम होना आवश्यक है। भाषा ही संचार का माध्यम है। भाषा के माध्यम से ही एक व्यक्ति दुसरे से, एक समूह को दुसरे समूह से और एक देश को दुसरे देश से जोड़ा जा सकता है। इसलिए सूचनाओं एवं भावनाओं को एक-दुसरे तक सम्प्रेषित करने की कला का नाम संचार है। संचार माध्यम का प्रभाव समाज में अनादिकाल से ही रहा है। परंपरागत एवं आधुनिक संचार माध्यम समाज की विकास प्रक्रिया से जुड़े हुए है। संचार माध्यम का श्रोता अथवा लक्ष्य समूह बिखरा होता है। फिर संचार माध्यम ही संचार प्रक्रिया के अंजाम तक पहुंचते है। जनसंचार, जनसंपर्क या लोकसंपर्क से तात्पर्य उन सभी साधनों के अध्ययन एवं विश्लेषण है, जो एक साथ बहुत बड़ी जनसंख्या के साथ संबंध संबंधित करने में सहायक होते है।

प्रायः इसका अर्थ सम्मिलित रूप से समाचार, पत्र, पत्रिकाएँ रेडिओ, दूरदर्शन, चलचित्र से लिया जाता है जो समाचार एवं विज्ञापन दोनों के प्रसारण के लिए प्रयुक्त होते है। जनसंचार माध्यम में संचार शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के चर धातु से हुई है। जिसका अर्थ है चलना। संचार के सभी माध्यम में हिन्दी ने मजबूत पकड़ बना ली है। चाहे वह हिन्दी समाचार पत्र हो, रेडियो हो, दूरदर्शन हो, हिन्दी सिनेमा हो, विज्ञापन हो या ओ.टी.टी. हो सर्वत्र हिन्दी छायी हुई है। वर्तमान समय में हिन्दी को वैश्विक सन्दर्भ प्रदान करने में उसके बोलने वालों की संख्या, हिन्दी फिल्मे, पत्र-पत्रिकाएँ, विभिन्न हिन्दी चॅनल, विज्ञापन एजेंसियां, हिन्दी का विश्वस्तरीय साहित्य तथा साहित्यकार आदि का विशेष योगदान है। इसके अतिरिक्त हिन्दी को विश्व भाषा बनाने में इन्टरनेट की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज हिन्दी अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम बन गई है। हिन्दी चैनलों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बाजार की प्रतिस्पर्धा के कारण ही सभी अंग्रेजी चैनलों का हिन्दी रूपांतरण हो रहा है। इस समय हिन्दी में भी एक लाख से ज्यादा लोग सक्रिय है। अब सैंकड़ों पत्र-पत्रिकाऐं इन्टरनेट पर उपलब्ध है। हिन्दी में वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों में भी देखा जा सकता है।

संचार माध्यमों ने हिन्दी के वैश्विक रूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है। भाषाएँ संस्कृति की वाहक होती है और संचार माध्यमों पर प्रसारित कार्यक्रमों से समाज के बदलते सच को हिन्दी के बहाने ही उजागर किया गया है। डिजीटल दुनिया में हिन्दी की मांग अंग्रेजी की तुलना में पांच गुना ज्यादा तेज है। भारत में हर पांचवा इन्टरनेट प्रयोगकर्ता हिन्दी का प्रयोग करता है। देश में जहां हिन्दी सामग्री की डिजिटल मीडिया में खपत 94 फिसदी की दर से बढ़ रही है, वहीं अंग्रेजी सामग्री की खपत केवल उन्नीस फिसदी की दर से बढ़ रही है। लगभग पूरी दुनिया में आज हिन्दी जनसंचार माध्यमों की सबसे लोकप्रिय भाषा बनकर उभर रही है। भारत में ही नहीं दक्षिण-पूर्व एषिया, मारीशस, चीन, जापान, कोरिया, मध्य एशिया, खाड़ी के देश, अफ्रिका, युरोप, कनाडा तथा अमेरिका में हिन्दी जनसंचार की भाषा के रूप में प्रचलित हो रही है। इन देशों में

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

भी कई टी.वी. चैनल, हिन्दी में काम कर रहे है और इस पर हिन्दी कार्यक्रम भी प्रसारित हो रहे है। कभी जिन देशों में हिन्दी शब्दों के दर्शन भी नहीं प्राप्त होते थे, आज वहां पर हिन्दी कई विश्वविद्यालयों, कालेजों में विषय के रूप में पढ़ाई जा रही है और विद्यार्थी हिन्दी को एक विषय के रूप में पढ़ते है।

आजकल विश्व के कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी विषय के अलग विभाग भी बनाये गए है, जहां छात्र एवं छात्राएँ उच्च शिक्षा भी ग्रहण करते है। पहले विश्व में भारत के अलावा प्रमुखतया मारीशस ही ऐसा देश था जहां हिन्दी के सात टी.वी. चैनल थे। और जहां अनेक लेखक अपनी रचनाओं को हिन्दी में लिखते थे और हिन्दी के विकास में योगदान दे रहे है। हिन्दी के व्यापक स्वरूप तथा बाजारवाद की नीति के कारण कई इंटरनेट कंपनियां जैसे माइक्रोसाफट, जीमेल, हाटमेल, याहू आदि भी अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी के प्रयोग पर लगातार बल दे रही है। क्योंकि हिन्दी के विश्व में बढ़ते प्रभाव को देखते हुए इंटरनेट कंपनियों ने ज्यादा से ज्याद मुनाफा कमाने के लिए वह भी हिन्दी के जानकार कर्मचारियों को नियुक्ति के साथ-साथ अच्छा वेतन भी दे रही है। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को सर्व स्वीकार्य बनाने में जनसंचार माध्यमों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन सभी जनसंचार माध्यमों के ही कारण हिन्दी की लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। रेडियो, टेलिविजन, इंटरनेट, समाचार पत्र, सोशल मीडिया, बालीवुड आदि हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कोई प्रयास नहीं छोड़ रहा है। ये सभी जनसंचार माध्यम समाचार, विचार, शिक्षा, साामजिक सरोकार, संगीत, नाटक, काव्य, मनोरंजन आदि क्षेत्रों में अपने प्रसार के माध्यम से हिन्दी को भारत के कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी व बंगाल से कच्छ तक के सभी दुर्लभ या दुर्गम क्षेत्रों में भी पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

जनसंचार माध्यम के साधनों के प्रचार-प्रसार के कारण आज वर्तमान समय में हिन्दी एक बड़ी सशक्ति के रूप में उभरी है। विश्व में तीसरी सबसे बड़ी भाषा के रूप में आज अपनी विद्यमानता सिध्द कर रही है। आज जनसंचार के साधनों ने हिन्दी को एक वैश्विक स्वरूप प्रदान किया है। वर्तमान में ऐसा कौनसा व्यक्ति होगा जो मोबाईल इंटरनेट, फेसबुक, सोशल मीडिया आदि से जुड़ा न हो। अधिकांश जन-समूह इन साधनों के माध्यम से हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान दे रहा है और हिन्दी निरन्तर नवीन उचांइयों को छू रही है। यदि हम पिछले दशकों की बात करें तो जब जनसंचार के माध्यम इतने कम तथा अशक्त थे तब व्यापक जनसमूह तक अपनी बात पहुंचाने में बहुत अधिक समय लगता था, तथा सूचना सभी लोगों तक सही से पहुंच भी नहीं पाती थी। इसका प्रमुख कारण यह था कि या तो साधन नहीं थे, या फिर इन साधनों का माध्यम अंग्रेजी था और हिन्दी एक दुसरे दर्जे की भाषा मानी जाती थी। परन्तु नवाचार के आने से हिन्दी आज विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषा एवं सम्प्रेषणीय भाषा बन गई है।

जनसंचार माध्यमों के महत्व को रेखांकित करते हुए डॉ. अर्जुन तिवारी ने लिखा है कि "समाज, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रसार तथा मानव संघर्ष क्रांति, प्रगति, दुर्गतिमय जीवन, सागर में उठने वाले ज्वार भाटा को दिग्दर्शित करने में जनसंचार माध्यम ही सक्षम है। जनता, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के सजग प्रहरी जनसंचार के ही साधन है, जो हमें गरीबी का भूगोल, पूंजीपतियों का अर्थशास्त्र और नेताओं का समाजशास्त्र पढ़ाते है।"1

प्राचीन भारत में परम्परागत रूप से समूह संचार अपनाया जाता रहा है। जिसमें मेले, तीर्थाटन, सभा, विविध नाट्य रूपों आदि के माध्यम से होते थे। इन संचार माध्यमों में विविध नाट्य रूपों, नाटक, कथा वाचन, बाउल, सांग, रागिनी, तमाशा, लावणी, जात्रा, गंगागौर, यक्षगान, बिरहा, आल्हा, लोकगीत आदि का विशेष महत्व है। इन विधाओं के कलाकार मनोरंजन के साथ-साथ एक क्षेत्र से दुसरे क्षेत्र में संदेश पहुँचाने और

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(*https://jetjournal.us/*)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

जनमत निर्माण करने का काम भी करते थे। वर्तमान में जनसंचार का जो विकसित रूप विश्व प्रचलित है, इसमें विशेष योगदान वैज्ञानिकों का है। भारत में जनसंचार के जो आधुनिक माध्यम प्रयोग में लाए जा रहे है उसमें अधिकतर में विशेष योगदान पश्चिमी देशों का ही है। जनसंचार के आधुनिक माध्यमों के जो रूप आज भारत में प्रचलित है, वे निश्चिय ही हमें अंग्रेजों से मिले है।2

चाहे समाचार पत्र हो या रेडियो, टेलीविजन, कम्प्युटर, इंटरनेट सभी माध्यम पश्चिम से ही आए है। भारत ने आरम्भ में उन्हें उसी रूप में अपनाया, लेकिन धीरे-धीरे वे यहां की सांस्कृतिक विरासत के अंग बनते चले गए। चाहे फिल्में हो या टी.वी. सीरियल एक समय के बाद वे भारतीय नाट्य परम्परा से परिचालित होने लगते है। इसलिए आज के जनसंचार माध्यमों का खाका भले ही पश्चिमी हो लेकिन उसकी विषयवस्तु, स्वरूप और भाषा भारतीय ही है। हिन्दी के प्रसार में जनसंचार के साधनों के रूप में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने भी क्रांति ला दी है। इलेक्ट्रानिक मीडिया के आगमन से हिन्दी को एक नवीन दिशा प्राप्त हुई है। टी.वी चैनल, इंटरनेट, सोशल मीडिया आदि के द्वारा हिन्दी को विश्व के कोने-कोने तक फैलने का अवसर प्राप्त हुआ है। आज यह स्पष्ट हो गया है कि, "अंग्रेजी का रिपोर्टर भी हिन्दी चैनलों में दिखने के लिए अपने बायोडाटा देने लगे है और इसके साथ-साथ विज्ञापन की दुनिया भी समझ गई कि अब अपना विज्ञापन करने के लिए ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाने के लिए अब हिन्दी भाषा का प्रयोग करें। इस समझ को लपकने में भारतीय नेताओं ने भी पल भर की देर नहीं लगाई। वे अपने जनसंपर्क कंपनियों की मदद से कोशिश करने लगे कि अंग्रेजी चैनल में चेहरा भले ही न दिखे लेकिन हिन्दी चैनलों में तो अपनी उपस्थिती दर्ज करानी ही है ताकि भारतीय जनता देखें और समझें कि हम लगातार काम कर रहे है। इसके अलावा यदि वहां हम वोट मांगने जाएं तो जनता उन्हें दूर से ही पहचान ले क्योंकि हिन्दी भारत में जनसंचार की प्रमुख भाषा बन गई है।"3

नब्बे के दशक में भारत में उदारीकरण, वैश्वीकरण और औद्योगीकरण की प्रक्रिया तेज हुई। परिणामस्वरूप अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत आयी। मगर इन सबको हिन्दी को अपनाना पड़ा। जिन सॅटेलाईट चैनलों ने भारत में अपने कार्यक्रम का आरम्भ केवल अंग्रेजी भाषा में किया था उन्हें भी अपनी भाषा नीति में परिवर्तन करना पड़ा है। अब स्टार प्लस, जी टी.वी, जी.न्यूज जैसे कई टी.वी.चैनल अपने सारे कार्यक्रम हिन्दी में दे रहे है। कौन बनेगा करोड़पति की लोकप्रियता ने मीडिया के क्षेत्र में हिन्दी के झण्डे गाड़ दिए है। जुरासिक पार्क से लेकर टाईटेनिक और अब एक्सपैणबल तक लगभग सारी हॉलीवुड फिल्मों को हिन्दी में डब करके एक साथ पूरे भारत में रिलीज किया जाने लगा है। हॉलीवुड फिल्मों को हिन्दी में डब करने का व्यापार लगभग करोड़ो रूपयों का है। हिन्दी के भाषा रूप को दिन-प्रतिदिन बढ़ता देखकर प्रश्न यह उठता है कि क्या हिन्दी बच पाएगी ? यदि वैसी हिन्दी बच भी गई तो क्या जिन हालातों ने हिन्दी को यहां तक पहुंचाया है, वहीं उसे जर्जर हालत में न छोड़ देंगे ? हमें तो यह आशंका है कि धीरे-धीरे अन्य भारतीय भाषाओं की तरह कहीं हिन्दी भी लुप्त प्राय न हो जाए ! हिन्दी निरन्तर संघर्ष करते आगे बढ़ रही है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अनेक बाधाएँ आई है। हिन्दी में यांत्रिक प्रयोग की व्यापक अभिव्यक्ति की क्षमता के लिए विविध स्तरों पर अनेक उपाय किए गए हैं, और आज भी किए जा रहे है।

वर्तमान के विश्व में सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों की भाषा हिन्दी है। हिन्दी को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह, चैनल, विदेशी ऐजेंसियां, यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। आज भारतीय उपमहाद्वीप में ही नहीं अपितु चीन, जापान, अमेरिका, ब्रिटेन तथा मध्य एशिया तक हिन्दी कार्यक्रम उपग्रह चैनल के माध्यम से प्रसारित हो रहे है। मारीशस में हिन्दी के सात चैनल है। आज ई-मेल, ई-कामर्स, इण्टरनेट,

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

वेब जगत ने सहजता से हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा है। विश्वस्तरीय कंपनियां भी अपने व्यापार, बाजार को बढावा देने के लिए हिन्दी का प्रयोग कर रही है। इण्टरनेट के आने से सोशल मीडिया ने समाज में संचार क्रांति ला दी है। कौन व्यक्ति, वस्तु, संस्था, कंपनी कितनी प्रभावशाली है उसका माप, उसके ट्वीटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि में उसके फालोअर से आंका जा सकता है। अब जब यह तकनीक डेस्कटाप, कम्प्युटरों, लॅपटाप से निकलकर मोबाईल फोन पर आ गई है, जो सर्वव्यापी, सर्वप्रथम, सर्वत्र और सर्वसुलभ हो गया है। आज के समय में हर देश का लगभग हर युवा, बुजुर्ग एवं ताकतवर लोग एवं संस्थाओं में भी इसका अधिकतम प्रयोग हो रहा है।

आधुनिक युग में जनसंचार के सबसे प्रभावी माध्यम के रूप में वीडियों कान्फ्रेरसिंग एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरी है। ई-वेबीनार के माध्यम से इसकी लोकप्रियता दिन-रात बढ़ती ही जा रही है। इसके माध्यम से एक व्यक्ति और अनेक व्यक्ति दुसरे व्यक्तियों को सामने देखते हुए विश्व के किसी कोने में आपस में बात कर सकते है। इसमें श्राव्य-दृश्य दोनों प्रकार से सम्पर्क स्थापित करने की सुविधा होने के कारण इसमें संसाधनो की बहुत बचत हो जाती है। इस माध्यम के द्वारा हिन्दी भाषा का भी प्रयोग कर हिन्दी को सम्पूर्ण विश्व में जनसंचारित किया जा रहा है, इसके द्वारा विदेशों में भारतीय या हिन्दी भाषी हो या हिन्दी भाषी सभी लोग बड़ी आसानी से अपने विचारों का आदान-प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान समय में हिन्दी फिल्में, रेडियों, टी.वी. चैनलों ने भारत में ही नहीं अपितु विश्व में भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन साधनों के प्रचार से विश्व के लोगों ने हिन्दी के महत्व को समझा है। आज जनसंचार के साधन हायटेक हो गए है, जिसके फलस्वरूप इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के युग का प्रारम्भ होता है, जिसमें हिन्दी को एक वैश्विक रूप प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

इन आधुनिक जनसंचार के माध्यमों के साथ-साथ परम्परागत साधनों में शास्त्रीय संगीत, नृत्य, लोकसंगीत तथा लोक कथाएँ आती है। जिनके प्रति विश्व के लोगों में पहले से ही आकर्षण रहा है। इन सभी का पूरी तरही से आनंद लेने के लिए दुनिया के लोगों ने हिन्दी को जानना व समझना शुरू किया, जिससे हिन्दी भाषा जनसंचार के माध्यम से विश्व तक फैली। इन साधनों के माध्यम से विश्व जगत भारतीय भाषा, संस्कृति आदि से परिचित हुआ और हिन्दी भाषा को कई नवीन आयाम प्राप्त हुए। आज का मीडिया हिन्दी की क्षमता को जानने के बावजूद उसका इस्तेमाल अपनी संकुचित दृष्टि से कर रहा है। परिणामस्वरूप जितनी तेजी से हिन्दी बढ़ रही है, उतनी ही तेजी से उसका स्वरूप भी विकृत होता जा रहा है। मीडिया का प्रभाव क्षेत्र सर्वव्यापी है। यदि वह जिम्मेदारी से अपनी भाषा के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वाह करें तो हिन्दी के स्थायित्व को काफी हद तक अपने पक्ष में किया जा सकता है। इस समय मीडिया के जागरूक होकर कार्य करने तथा भाषा के प्रति जिम्मेदार होकर अपनी सकारात्मक भूमिका अदा करने की है।

जनसंचार का कार्य भाषा के बिना संभव ही नहीं है। आज के इस आधुनिक काल को सूचनाओ के विस्फोट का काल माना गया है , क्योंकि जनसंचार के इन असंख्य माध्यमों ने तथा तमाम सुविधाओं ने मनुष्य को इतना सूचना संपन्न कभी नही बनाया था। जो आज मनुष्य को इतनी सूचनाएँ मिल रही है। आज के इस वैज्ञानिक और तकनीकी युग में संचार माध्यमों का महत्व दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है। यह हमारे जीवन को एक नई दिशा भी प्रदान करता है। इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर खड़ी हिन्दी भाषा में सूचना विस्फोट की चुनौतियों को पूरी क्षमता और सक्रियता के साथ अपनाया है। हिन्दी भाषा का यह प्रभाव स्वतंत्रतापूर्व काल स्वातंत्रयोत्तर काल से लेकर आज तक जनसंचार के माध्यमों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जनसंचार के

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

माध्यमों के अंतर्गत मुख्यतः समाचार, रेडियो, दूरदर्शन फिल्म तथा कंप्यूटर आदि आते है, तो जन संचार के इन माध्यमों ने विश्व में फैली समस्त मानव जाति और जीवन को भी प्रभावित किया है। शिक्षा ने विज्ञान को जन्म दिया है और विज्ञान ने जनसंचार के आधुनिक शिक्षा तथा विज्ञान दोनो के प्रचार एवं प्रसार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। जनसंचार का अर्थ है सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना सिर्फ इतना ही नहीं, जनसंचार के माध्यमों द्वारा जनमत का निर्माण भी सहज संभव होता है, और इसीसे जनसंचार के विविध माध्यमों में हिन्दी भाषा का प्रभाव भी खूब दिखाई देता है। जनसंचार के समग्र माध्यमों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है। सर्वप्रथम मुद्रित माध्यम जिसके अन्तर्गत समाचार, पत्र-पत्रिकाएँ तथा किताबे आदि आते है। दूसरा श्रव्य माध्यम जिसके अंतर्गत रेडियो टेपरिकार्डर या कैसेट आदि को सुना जा सकता है। तिसरा दृश्य काव्य संचार माध्यम जिसके अन्तर्गत दूरदर्शन, फिल्म तथा इंटरनेट, कम्प्युटर आदि आते है। अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम भाषा है, और जो भाषा जितनी ही सहज और सुलभ होगी, उतना ही उस का समाज में प्रभाव बढ़ता जाता है।

यही कारण है कि संचार माध्यमों ने भाषा की अभिव्यक्ति हेतु हिंदी को ही चुना जो आज विश्व में सबसे ज्यादा लोगों के बीच बोली जानेवाली भाषा है। जनसंचार के विविध माध्यमों द्वारा हिन्दी का समाज में बढ़ता प्रभाव अलग अलग रूपों में देखा जा सकता है।"जनसंचार का काम हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ आजादी के पहले भारत में करती आ रही हैं। हिंदी में पहला समाचार पत्र पंडित युगलकिशोर 'सुकुल' ने 30 मई 1826 में 'उदन्त मार्तड' का प्रकाशन किया जो एक अहिंदी भाषी प्रदेश कोलकाता से किया। 30 मई 1826 को ही कर्नाटक से भी एक हिंदी दैनिक 'समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका' का प्रकाशन किया था जो 13 वर्षो तक नियमित हुआ था। तत्कालीन मद्रास से बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'चन्दामामा' का प्रकाशन हुआ। हैदराबाद से कभी 'कल्पना' निकलती थी, आज वहाँ से 'हिन्दी मिलाप' निकल रहा है। आज भी हिन्दी के अखबारों की प्रसार संख्या में अधिक देखने को मिल रही है।"4

डॉ. प्रभाकर माचवे ने समाचार पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तक जैसे जनसंचार माध्यम को जन संचार माध्यम की चौथी या पाँचवी रियासत में लिखा है कि " पुराने जमाने में राजा, गुरू और पंच ही शक्ति के केन्द्र थे। सिंहासन, मंदिर या मठ और ग्राम पंचायत लोगों के विचारों के निर्णयक रास्ता थे, धीरे-धीरे शिक्षालयों ने इसका स्थान ले लिया है। विद्यालय और प्रेस ने पुरानी प्रीन्सप्रीस्ट और प्रायमरी का स्थान ले लिया है। महाराज महंत और पंच की जगह अखबार आ गऐ।"5

जनसंचार माध्यमों में अखबार और समाचार पत्र जनता की धरोहर बन गए है। यही आज जनता के रक्षक, आगज, शिक्षक, कालेज आदि सबकुछ हो गए है। हिन्दी प्रदेशों में व्याप्त गरीबी के कारण सारे घरों में भले ही अखबार न पहुंच पाते हों, लेकिन हिन्दी के अखबारों की पाठकों की संख्या दिन-ब-दिन बढती ही जा रही है। छोटे-छोटे शहरों और कस्बोंसे हिन्दी अखबार निकल रहा है। इसी प्रकार दूरदर्शन शुरू में अनेक निजी चैनलों ने हिन्दी की उपेक्षा की लेकिन जल्दी ही उन्हें महसूस हुआ कि हिन्दी के बगैर काम चलनेवाला नही है, तो हिन्दी को माध्यम बनाना होगा। जो हमारे जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है। इस प्रकार हम कह सकते है कि पहले समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, आकाशवाणी, दूरदर्शन, सिनेमा, संगणक, दूरभाषा तथा इंटरनेट आदि सभी जनसंचार के माध्यमों में संदेशवाहक का कार्य करने में हिन्दी का ही प्रयोग किया जा रहा है। हिन्दी का जनसंचार के माध्यमों में बदलते समय के साथ भी अपना मार्ग बदलता हुआ दिखाई देता है। स्वतंत्रता के पूर्व

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

से लेकर आज तक की बातें यह जन मानस तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण कार्य हिन्दी ने किया है। ज्ञान की प्राप्ति विचारों की अभिव्यक्ति का इन संप्रेषण माध्यमों में वह कर सकते हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा को एक वैश्विक पहचान दिलाने में इस परम्परागत तथा आधुनिक दोनों माध्यमों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन जनसंचार साधनों के माध्यम के रूप में हिन्दी का प्रयोग किए जाने के कारण हिन्दी भाषा अब और भी ज्यादा समृध्द और शक्तिशाली हो गई है। हिन्दी भाषा को और भी अधिक शक्तिशाली तथा मजबूत स्थिति प्रदान करने का कार्य लगातार इन जनसंचार साधनों और माध्यमों द्वारा किया जा रहा है। इसके फलस्वरूप आज विदेशों में जनसंचार के क्षेत्र में हिंदी भाषा का महत्व बढ़ता जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रंथः

1. भाषा और प्रौद्योगिकी, डा. विनोदकुमार प्रसाद, पृष्ठ-73, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1999
2. हिन्दी और उसकी उपभाषाएँ, विमलेश कांति वर्मा, पृष्ठ-82, प्रकाशन
3. विभाग, नई दिल्ली, संस्करण-1995
4. भारतीय भाषाएं और राष्ट्रीय अस्मिता, योगेन्द्र सिंह, मुकुंद द्विवेदी, पृष्ठ-205, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2006.
5. भाषा की अदालत में समाचार पत्र-पद्मजा घोरपडे, पृष्ठ-28.
6. प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका कैलाशनाथ पाण्डेय, पृष्ठ-120.

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved